फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

कहत कबीर

रफ्तार आतकवाद का एक चेहरा है। गति का उत्पादन तन-मन को हुलुहान करता है, गति का उपभोग खूनखच्चर लिये है।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी फरीदाबाद–121001

नई सीरीज नम्बर 215 मई 2006

आप-हम क्या-क्या करते हैं... (12)

अपने स्वयं की चर्चायें कम की जाती हैं। खुद की जो बातें की जाती हैं वो भी अक्सर हाँकने- फाँकने वाली होती हैं, स्वयं को इक्कीस और अपने जैसों को उन्नीस दिखाने वाली होती हैं। या फिर, अपने बारे में हम उन बातों को करते हैं जो हमें जीवन में घटनायें लगती हैं – जब- तब हुई अथवा होने वाली बातें। अपने खुद के सामान्य दैनिक जीवन की चर्चायें बहुत- ही कम की जाती हैं। ऐसा क्यों है ? ★ सहज- सामान्य को ओझल करना और असामान्य को उभारना ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के आधार- स्तम्भों में लगता है। घटनायें और घटनाओं की रचना सिर- माथों पर बैठों की जीवनक्रिया है। विगत में भाण्ड- भाट- चारण- कलाकार लोग प्रभुओं के माफिक रंग- रोगन से सामान्य को असामान्य प्रस्तुत करते थे। छुटपुट घटनाओं को महाघटनाओं में बदल कर अमर कृतियों के स्वप्न देखे जाते थे। आज घटना- उद्योग के इर्दगिर्द विभिन्न कोटियों के विशेषज्ञों की कतारें लगी हैं। सिर- माथों वाले पिरामिडों के ताने- बाने का प्रभाव है और यह एक कारण है कि हम स्वयं के बारे में भी घटना- रूपी बातें करते हैं। ★ बातों के सतही, छिछली होने का कारण ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्था में व्यक्ति की स्थिति गौण होना लगता है। वर्तमान समाज में व्यक्ति इस कदर गौण हो गई है कि व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना बराबर जैसा लगने लगा है। खुद को तीसमारखाँ प्रस्तुत करने, दूसरे को उन्नीस दिखाने की महामारी का यह एक कारण लगता है। ★ और, अपना सामान्य दैनिक जीवन हमें आमतौर पर इतना नीरस लगता है कि इसकी चर्चा स्वयं को ही अरुचिकर लगती है। सुनने वालों के लिये अक्सर "नया कुछ" नहीं होता इन बातों में। ★ हमें लगता है कि अपने- अपने सामान्य दैनिक जीवन को "अनदेखा करने की आदत" के पार जा कर हम देखना शुरू करेंगे तो बोझिल- उबाऊ- नीरस के दर्शन तो हमें होंगे ही, लेकिन यह ऊँच- नीच के स्तम्भों के रंग- रोगन को भी नोच देगा। तथा, अपने सामान्य दैनिक जीवन की चर्चा और अन्यों के सामान्य दैनिक जीवन की बातें सुनना सिर- माथों से बने स्तम्भों को डगमग कर देंगे। ★ कपड़े बदलने के क्षणों में भी हमारे मन- मस्तिष्क में अक्सर कितना- कुछ होता है ! लेकिन यहाँ हम बहुत- ही खुरदरे ढँग से आरम्भ कर पा रहे हैं। मित्रों के सामान्य दैनिक जीवन की झलक जारी है।

उन्नीस वर्षीय मजदूर : सुबह 6½ उठता हूँ। तेखण्ड में नये बने मकान में हम तीन ने 8'X8' कमरा 910 रुपये महीना किराये पर लिया है। मकान दो मंजिला है – 15 कमरे हैं, मकान मालिक बाहर रहता है। एक लैट्रीन ऊपर व एक नीचे है और अभी 3-4 कमरे खाली हैं इसलिये लैट्रीन के लिये लाइन में तो लगना पड़ता है पर ज्यादा नहीं। नहाने की जगह नहीं है – मर्द गली में और औरतें कमरों के अन्दर नहाती हैं। इससे पहले वाले मकान में भीड़ ज्यादा थी और बहुत- ही छोटे कमरे का किराया 920 रुपये था।

7 बजे एक बन्दा झूठे बर्तन साफ करता है, दूसरा आटा गूँथ कर रोटी बनाता है, तीसरा सब्जी बनाता है। फिर नहाते हैं। 8½ बजे रोटी खा कर तीनों ड्युटी के लिये चल पड़ते हैं।

इस समय आनन्द इन्टरनेशनल की डी-3 ओखला फेज-1 वाली फैक्ट्री में काम करता हूँ। सुबह 9 बजे ड्युटी आरम्भ होते ही टारगेट पर जुट जाना पड़ता है। आजकल टाई बना रहा हूँ – लगा तब एक टाई के लिये कम्पनी ने 12 मिनट समय निर्धारित कर रखा था जिसे 3 दिन बाद 11 मिनट किया, फिर 10-9-8 मिनट करते हुये अब 7 मिनट कर रखा है। टारगेट ज्यादा के कारण आनन्द इन्टरनेशनल की ए-185 वाली फैक्ट्री दो महीने काम करने के बाद मैंने छोड़ी – लगा तब स्कर्ट के लिये कम्पनी ने 20 मिनट समय निर्धारित कर रखा था जिसे एक दिन बाद 19 मिनट कर दिया और फिर दूसरे-तीसरे दिन समय घटा- घटा कर 10 मिनट कर दिया था। रफ्तार बहुत तेज करनी पड़ती है, शरीर से जो नहीं हो सकता वह काम लिया जाता है....

पिताजी बर्तन की छिलाई का काम करते थे। सेठ लोग उन्हें कानपुर, नागपुर, नेपाल ले जाते थे। लेकिन स्टील व अल्युमिनियम के कारण अब पीतल-ताम्बा-ग्लैन्ट के लौटा-थाली-गगरा-कसाड़ी नहीं चलते। सातवीं के बाद विद्यालय छोड़ कर मैंने गाँव में सिलाई का काम सीखा। पन्द्रह वर्ष का था तब अप्रैल 2002 में मैं गाँव के एक चाचा के साथ दिल्ली आया और उन्होंने मुझे ओखला फेज-1 में ए-257 स्थित राज मटार फैक्ट्री में लगवाया....

फैक्ट्री में गाँव वाली छोटी सिलाई मशीन की बजाय बड़ी जुक्की मशीन और फैशन का काम। सीखने-करने के दौरान 4 महीने मुझे लगातार सुबह 9 से रात 1 बजे तक काम करना पड़ा – कम्पनी का दबाव था कि करो या बाहर जाओ और चाचा भी कहते कि करो। कच्ची उम्र थी, 4 महीने सुबह 9 से रात 1 बजे तक काम करने के कारण बीमार पड़ गया। दिल्ली में डॉक्टर उषा महेश्वरी ने 200 रुपये फीस ली और टी.बी. बताई। गाँव गया और इलाहाबाद में डॉक्टर पाण्डे ने 20 रुपये फीस ले कर खून खराब बताया – 4 महीने गाँव में रह कर डॉक्टर पाण्डे की दुकान से 20% अधिक मूल्य पर दवाई ले कर इलाज करवाया। फिर दिल्ली आ कर पीएम्परो एक्सपोर्ट फैक्ट्री (एफ 2/6 ओखला फेज-1) में लगा। यहाँ पैसे कमाता और 8-9 महीने इलाहाबाद जा कर दवाई लाता रहा। फिर ओखला में एक मित्र बना और उसने उपचार किया.... पीएम्परो एक्सपोर्ट फैक्ट्री में मैंने तीन साल काम किया – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।

☞ (बाकी पेज दो पर)

इधर डी-3 आनन्द इन्टरनेशनल में रोज सुबह 9 से रात 12 बजे तक काम करना पड़ रहा है – ड्युटी 9 से 9 है पर कोई मजदूर रात 9 बजे छुट्टी कर लेगा तो कम्पनी उसे 8 बजे तक ही ड्युटी पर मानेगी, यानि, एक घण्टा किये काम के 16½ रुपये बचाने हैं तो रात 12 बजे तब काम करो ! खाता 15 अप्रैल को सील हो जायेगा – मतलब कार्ड बन्द, नया कार्ड बनेगा। कार्ड का नम्बर बदलता रहता है, कार्ड फैक्ट्री में ही रहता है। टारगेट की दौड़ में इन 15 दिन में मेरे 30 घण्टे माइनस होंगे – 495 रुपये कटेंगे।

फैक्ट्री में सुबह 9 बजे काम शुरू करते हैं। टारगेट, टारगेट की लगी रहती है – पेशाब के लिये जाओ तो माइनस, पानी के लिये जाओ तो माइनस.... बहुत मजबूरी में ही हम पानी- पेशाब को जाते हैं। सवा बजे भोजन अवकाश होने पर ही मशीनों से उठते हैं। कैन्टीन में बोर्ड पर लिख रखा है कि थाली 8 रुपये में और चाय 1½ में पर देते 12 और 2 रुपये में हैं – टोकने पर कहते हैं कि बोर्ड पर दिखाने के लिये लिखा है। भोजन अवकाश 45 मिनट का रहता है और जल्दी निकालने के लिये गेट पर जाँच के वास्ते दो सेक्युरिटी गार्ड लगा देते हैं – रात 12 बजे छूटने के समय भीड़ लगती है क्योंकि एक ही गार्ड होता है और फैक्ट्री से निकलने में ही 10 मिनट लग जाते हैं।

भोजन करने कमरे पर जाते हैं। खाना सुबह ही बना कर रख जाते हैं। भोजन कर बर्तन झूठे ही छोड़ देते हैं – थोड़ा और आराम के लिये।

2 बजे से फिर फैक्ट्री में मशीनों पर बैठ जाते हैं। चार बजे 15 मिनट के चाय ब्रेक पर फैक्ट्री से

कानून हैं शोषण के लिये
छूट है कानून से परे शोषण की

डी.ए. के 87 रुपये 78 पैसे जुड़ने के बाद 1.1.2006 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन इस प्रकार हैं: 8 घण्टे ड्युटी और साप्ताहिक छुट्टी पर महीने में अकुशल मजदूर को 2447 रुपये 32 पैसे; अर्ध- कुशल को 2557 रुपये 32 पैसे; कुशल मजदूर को 2707 रुपये 32 पैसे; उच्च कुशल मजदूर को 3007 रुपये 32 पैसे। आठ घण्टे काम के लिये अकुशल को 94 रुपये 13 पैसे; अर्ध- कुशल को 98 रुपये 36 पैसे; कुशल को 104 रुपये 13 पैसे; उच्च कुशल को 115 रुपये 67 पैसे। ***कम से कम इतने पैसे तो होने ही चाहियें....*** *जनवरी- अप्रैल का एरियर 351 रुपये 12 पैसे। कृषि कार्य में आठ घण्टे काम के लिये कम से कम 95 रुपये 13 पैसे बिना भोजन के और 91 रुपये 13 पैसे भोजन के साथ।*

जाह्नवी डाइंग मजदूर : "14/7 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में हम 100 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट में काम करते हैं। रोज 12 घण्टे काम पर 30 दिन के 2400 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। मार्च की तनखा आज 18 अप्रैल तक नहीं।"

कोविट इंजिनियरिंग वरकर : "प्लॉट 28 सैक्ट-59 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम 3½ घण्टे का और भुगतान सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 1800-2000 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

सिसोदिया इन्टरप्राइजेज मजदूर : "यामाहा प्लान्ट के पास स्थित फैक्ट्री में 200 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 1600-1700 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 200 में से दो-चार के ही। फरवरी का वेतन 23 मार्च को जा कर दिया था, मार्च की तनखा आज 12 अप्रैल तक नहीं दी है।"

आप-हम क्या-क्या करते हैं.... (पेज एक का शेष)

निकल कर चाय पीते हैं। सवा चार से 6 बजे तक मशीनों पर —15 मिनट के चाय ब्रेक में बाहर निकल कर कुछ खा लेते हैं और फिर 6 ¼ से मशीनों पर....

फैक्ट्री में 300 सिलाई की मशीनें हैं — बेसमेन्ट में हैं, बहुत गर्म रहता है, ठण्डी में भी पसीना आता है। घुटन हमेशा लगती है — हम 300 में से 10 ही स्वस्थ होंगे, 290 किसी न किसी बीमारी से पीड़ित हैं। ई.एस.आई. कार्ड हम में किसी को नहीं दिया है, प्रायवेट में अपने पैसों से इलाज करवाते हैं और ज्यादा बीमार होने पर कम्पनी निकाल देती है।

डी-3 आनन्द इन्टरनेशनल फैक्ट्री में पहली मंजिल पर ऑफिस है और दूसरी व तीसरी मंजिलों पर फिनिशिंग विभाग — धागा काटना, दाग हटाना, प्रेस करना, पैकिंग। चौथी मंजिल पर 15 से 25 हजार रुपये तनखा वाले हैं — हम लोगों से बात नहीं करते। पाँचवी मंजिल पर कैन्टीन के संग कपड़ा धुलाई के लिये केमिकल बनती है। फैक्ट्री में काम करते 500 पुरुष व महिला मजदूरों के लिये बेसमेन्ट में एक-एक लैट्रीन है — लाइन लगी रहती हैं।

आजकल रात 12 बजे तक रोकते हैं इसलिये 8½ बजे आधा घण्टा भोजन के लिये देते हैं। ढाबे पर खाते हैं — कम्पनी 20 रुपये देती है। फिर रात 9 से 12 तक मशीनों पर। कमरे पर पहुँच कर 1 बजे तक सो जाते हैं — दोपहर के बर्तन झूठे ही छोड़ देते हैं। आजकल कार्ड पर साँय 7½ बजे छूटने का समय डालते हैं, 1 ½ घण्टा ओवर टाइम दिखाते हैं — भुगतान डबल रेट से, जबकि वास्तव में सुबह 9 से रात 12 बजे तक 15 घण्टे काम करते हो जाते हैं। जब सुबह 9 से रात 9 तक ड्युटी होती है तब कार्ड में छूटने का समय 6 बजे डालते हैं — यह बायर अथवा श्रम विभाग को दिखाने के लिये। रविवार अथवा अन्य किसी वार की कोई छुट्टी नहीं... बायर गैप या लेनसन के प्रतिनिधि दिन बता कर आते हैं और उस दिन फैक्ट्री में साँय 6 बजे छुट्टी।

फैक्ट्री में बात जैसी बात नहीं होती, व्यवहार जैसा व्यवहार नहीं होता — अबे, बे-ते, गाली... झूठ, हेराफेरी का बोलबाला रहता है। पीस गलत बनने पर लाइनमैन की, मास्टर की बीच-बीच में झाड़ पड़ती है..... कमरे पर पानी के लिये, बिजली के लिये मकान मालिकों की झिक-झिक तो थोड़ी-बहुत होती ही रहती है।

जब रात 9 बजे छूटते हैं तब ड्युटी से लौटते समय एक बन्दा सब्जी ले आता है — तेखण्ड में रात 10 बजे तक तो मण्डी में भीड़भाड़ रहती है, दुकानदारों को सामान समेटने में रात के 12 बज जाते हैं। कमरे पर पहुँचते ही झूठे बर्तन धोना और भोजन बनाना। कमरे पर चाय बनाते ही नहीं। रात को दाल-चावल-रोटी बनाते हैं, सब्जी सुबह ही बनाते हैं। सब्जी, दाल, चावल, आटा, तेल, मसाले, गैस, साबुन तीनों मिल कर लाते हैं, एक-एक पैसे का हिसाब कापी में रखते हैं। इस समय बहुत नजदीकी सम्बन्धियों के साथ रह रहा हूँ .... हर रिश्ते में पाई-पाई का हिसाब रखना आ गया है। एक बन्दे के महीने में कमरा व भोजन आदि पर 1100 रुपये..... इनके अलावा फैक्ट्री में चाय-नाश्ते पर 10 रुपये रोज खर्च। सुबह 9 से रात 12 बजे तक ड्युटी में 5000 और सुबह 9 से रात 9 में 4000 रुपये महीने में मुश्किल से बनते हैं। यहाँ खर्चा देखने के संग गाँव पैसे भेजने.... बीच में बीमार पड़ गये तो अन्दाजा नहीं कितने लग जायें। चार साल से दिल्ली में हूँ, ठीक रहा ही नहीं — बीमारी पर 30-32 हजार रुपये खर्च। इस जीवन से क्या आशा लगायें? कैसे न कैसे जी रहे हैं। (जारी)

दरारें-दरारें...
(पेज चार का शेष)

कम्पनियों ने वियतनाम में वस्त्र-जूते-इलेक्ट्रोनिक्स- प्लास्टिक के खिलौनों की फैक्ट्रियाँ स्थापित की जिनमें दस लाख मजदूर लगे। और....और वियतनाम में मजदूरों के विरोध ने लहरों का रूप धारण कर लिया है: 28 दिसम्बर 05 को आरम्भ हुई पहली लहर 8 जनवरी 06 तक चली और इस दौरान पचास हजार मजदूरों ने 50 से ज्यादा फैक्ट्रियों में उत्पादन ठप्प किया। वियतनाम में यूनियन सरकार का एक विभाग है और फैक्ट्रियों में काम ठप्प करने में यूनियन की कोई भूमिका नहीं थी। मजदूरों ने जो किया वह गैरकानूनी.... एक मन्त्री ने हड़तालों का कारण कम्पनियों द्वारा सरकार के श्रम कानूनों का पालन नहीं किये जाने को बताया। मजदूरों को ठण्डा करने के लिये वियतनाम सरकार ने पहली फरवरी से न्यूनतम वेतन में 40 प्रतिशत वृद्धि की घोषणा की। अन्य सरकारों की ऐसी घोषणाओं की ही तरह वियतनाम सरकार की वेतन वृद्धि की घोषणा में भी कई पेंच निकले। फरवरी 06 में मजदूरों के विरोध ने दूसरी लहर का रूप धारण किया.... 15 मार्च को भी एक जूता फैक्ट्री के आठ हजार मजदूर हड़ताल पर थे। दूसरी लहर का वियतनाम सरकार के संचार माध्यम जिक्र ही नहीं कर रहे लेकिन कम्पनियों के मुख्यालयों में उत्पादन ठप्प होने ने हलचल मचा दी है — जापान, ताइवान, यूरोप में साहबों के एसोसियेशनों ने वियतनाम सरकार से डिमाण्ड की है कि वह मजदूरों द्वारा काम बन्द करने के खिलाफ प्रभावशाली कदम उठाये।

दिल्ली से -

1.2.06 से दिल्ली में 8 घण्टे ड्युटी और साप्ताहिक छुट्टी पर महीने में अकुशल मजदूर को 3271 रुपये, अर्ध- कुशल श्रमिक को 3437 रुपये, कुशल मजदूर को 3695 रुपये दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन हैं। दिल्ली में 1.2.06 से 8 घण्टे ड्युटी के बदले अकुशल मजदूर को 125 रुपये 80 पैसे, अर्ध- कुशल को 132 रुपये 20 पैसे, कुशल मजदूर को 142 रुपये 10 पैसे राज्य सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम दिहाड़ी हैं।

गुरु नानक इन्टरनेशनल मजदूर : "प्लॉट एफ 45 फर्स्ट फ्लोर ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में प्रतिदिन 12 से 15 घण्टे काम करने पर महीने के 1800 से 2800 रुपये देते हैं हालाँकि हम से हस्ताक्षर 3500 से 5000 रुपये वाले वाउचर पर करवाते हैं। यहाँ काम करते हम 100 मजदूरों में से 5 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। फैक्ट्री में पीने के पानी का प्रबन्ध नहीं है।"

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

दर्पण में चेहरा-दर-चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

न्यू एलनबरी वर्क्स मजदूर : "14/7 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में एक हजार के करीब कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर 12- 12 घण्टे की दो शिफ्ट में काम कर रहे हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल दर से। हैल्परों की तनखा 1800- 2000 रुपये। स्वयं के कदमों द्वारा मैनेजमेन्ट के नकेल डाल पाये हम 261 स्थाई मजदूरों ने चमत्कार के लिये दिसम्बर 03 में एक यूनियन का पल्लू पकड़ा था.... 83 स्थाई मजदूरों की नौकरियाँ और 8½ महीनों की तनखायें चमत्कार के भेंट चढी। कुट- पिट कर अन्दर पहुँचे स्थाई मजदूरों को मैनेजमेन्ट ड्युटी के दौरान खाली बैठाने लगी। नौकरी छोड़ने के लिये लगातार दबाव के चलते न्यू एलनबरी में अब 100 स्थाई मजदूर बचे हैं। और, कम्पनी अब भी 15 स्थाई मजदूरों को खाली बैठा रही है – तीन शिफ्टों में कर रखा है, ड्युटी के दौरान रैस्ट रूम में बैठो।"

ज्वाला स्टील कारपोरेशन वरकर : "प्लॉट 22 सैक्टर- 24 स्थित फैक्ट्री में 12- 12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल दर से। फैक्ट्री में 70- 80 मजदूर लोहे की पाइप बनाते हैं। शीट डलती है, फोल्ड होती है और काला तेल पाइप पर लग कर आता है – हाथ व कपड़े बहुत गन्दे होते हैं पर हाथ धोने के लिये आधी बट्टी साबुन काम करते 20 दिन होने के बाद कम्पनी देती है, इस बीच हाथ रेत से साफ करो। शीट मैटल का काम है पर दस्ताने नहीं देते – हाथ छिलते, कटते रहते हैं और फैक्ट्री में फस्ट एड का नाम तक नहीं है। कम्पनी ने नियम बना रखा है कि काम करते 10 दिन होने के बाद ही पैसे देंगे – पहले ही निकाल देते हैं और दस दिन से कम दिन काम किया कह कर पैसे नहीं देते। दस मजदूर 14 अप्रैल को निकाले और उन्हें काम किये दिनों के पैसे नहीं दिये। मैनेजिंग डायरेक्टर गाली देता है।"

राजशी स्टेयरिंग मजदूर : "प्लॉट 3 सैक्टर- 27 सी स्थित फैक्ट्री में 12- 12 घण्टे की दो शिफ्टों में 150 मजदूर काम करते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। हैल्पर को 8 घण्टे के 65 रुपये देते हैं – साप्ताहिक छुट्टी नहीं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 150 में से 60- 70 की ही हैं। फैक्ट्री में लैट्रीन बहुत गन्दी.... फैक्ट्री ही गन्दी है। पीने के लिये ठण्डा पानी नहीं। राजशी स्टेयरिंग में एस्कोर्ट्स, फिएट, मारुति आदि का काम होता है। मैनेजर गाली देता है।"

अल्फा टोयो वरकर : "प्लॉट 9 एच सैक्टर- 6 स्थित फैक्ट्री में ट्रॉब डिपार्ट अन्डरग्राउन्ड है और इसमें 150 मजदूर 12- 12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। यहाँ मारुति कार के नट- स्क्रू बनते हैं और श्रम विभाग से कोई आता है तब मैनेजमेन्ट बाहर से बन्द कर देती है। ट्रॉब विभाग में मजदूर को 12 घण्टे रोज ड्युटी पर 26 दिन के 2000 रुपये देते हैं – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

मेल्को प्रिसिजन मजदूर : "प्लॉट 4 सैक्टर- 27 ए स्थित फैक्ट्री में हम 50 वरकर रेलवे के पुर्जे बनाते हैं और कम्पनी ने फैक्ट्री में बीस कैमरे लगा रखे हैं। साहब कहते हैं कि हम को फैक्ट्री चलानी है, हमें तुम मजदूरों से कोई मतलब नहीं है। फैक्ट्री में 12 घण्टे की शिफ्ट है।"

भाई सुन्दरदास एण्ड सन्स वरकर : "20/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकर भर्ती के लिये कम्पनी के कुछ लोग 500 रुपये रिश्वत लेते हैं। ओवर टाइम लगवाने के लिये यह लोग महीने में 100 रुपये रिश्वत लेते हैं और बीच- बीच में कुछ खिलाने के लिये भी कहते हैं।"

लीडर

ईस्ट इण्डिया कॉटन मिल मजदूर : "एक सहकर्मी जो कि रिश्तेदार भी है, गाँव से आया और 12 अप्रैल को डाकखाने से उसने एक लाख रुपये की राशि निकाली – नये मकान की छत डालने के समय पैसा कम पड़ गया था। फैक्ट्री 1996 से बन्द है और जब चल रही थी तब भी तनखा कम थी – मुश्किल से पूरा पड़ता था। पूछा : इतने पैसे कैसे बचाये? पहले कभी जिक्र तक नहीं करने वाला सहकर्मी- रिश्तेदार बोला कि एक लाख नहीं बल्कि तीन लाख रुपये जमा किये.... यूनियन लीडर के तौर पर कम्पनी से 'एडवान्स' के रूप में पैसे मिले। चण्डीगढ गये तब प्रत्येक लीडर को कम्पनी ने 50- 50 हजार रुपये 'एडवान्स' में दिये थे। फिर तीन बार और कम्पनी ने पैसे दिये – 50 हजार, एक लाख, एक लाख। सहकर्मी- रिश्तेदार 1994- 95 में तब एक छोटा लीडर बना था जब कम्पनी की जेबी यूनियन के खिलाफ मजदूरों के विद्रोह पर नई यूनियन गठित की गई थी। मजदूरों के पक्ष में और कम्पनी के खिलाफ होने की शोहरत नई यूनियन की काफी दिन रही.... सहकर्मी- रिश्तेदार- लीडर की बातें पड़ोस में रह रहे एक अन्य सहकर्मी को बताई। कम्पनी की जेबी यूनियन में एक लीडर रहा वह सहकर्मी- पड़ोसी तब कम्पनी को गाली देते हुये बोला कि उसे तो कम्पनी ने साठ हजार रुपये ही दिये जबकि वह कम्पनी के समर्थन में बी.आई.एफ.आर. तक गया और वहाँ नई यूनियन वालों से पिटा भी.... बी. आई.एफ.आर. के कम्पनी समाप्त करने के निर्णय के खिलाफ अपील में गई ईस्ट इण्डिया कॉटन मिल मैनेजमेन्ट के समर्थन में नई यूनियन जब खुल कर आई और सब मजदूरों को औने- पौने में नौकरी से निकालने का समझौता किया तब शायद सहकर्मी- रिश्तेदार- लीडर को कम्पनी ने 'एडवान्स' के रूप में एक लाख रुपये वाली अन्तिम किस्त दी।"

हीरो का होण्डा

हीरो होण्डा फैक्ट्री में नियमित जाने वाला व्यक्ति: " हीरो होण्डा की गुड़गाँव फैक्ट्री में 1350- 1400 स्थाई मजदूर तथा ठेकेदार के जरिये रखे 5500 वरकर काम करते हैं – अन्य ठेकेदार के जरिये रखे 300- 400 सेक्युरिटी गार्ड भी हैं। ठेकेदार के जरिये रखे 5500 वरकरों ने 15 अप्रैल को अचानक काम बन्द कर दिया – फैक्ट्री में कार्य ठप्प हो गया और 21 अप्रैल को फिर आरम्भ हुआ। हीरो होण्डा की धारुहेड़ा फैक्ट्री प्रभावित नहीं हुई थी।

"अधिकतर स्थाई मजदूर मोटरसाइकिल असेम्बली में हैं। ठेकेदार के जरिये रखे वरकरों में से 25% मोटरसाइकिल असेम्बली में और 75% स्पेयर पार्ट्स डिविजन में हैं। ठेकेदार के जरिये रखे बरसों से काम कर रहे मजदूरों को हर तीन महीने पर हीरो होण्डा की मोहर वाला फोटो लगा एक कार्ड दिया जाता है जिस पर लिखा होता है कि हीरो होण्डा परिसर में काम करने की अनुमति है। ई.एस.आई. के नाम पर इस समय 206 रुपये तनखा से काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड किसी वरकर को नहीं दिया है – ठेकेदार बोलता है कि बीमार होगे तो इलाज करवा देंगे। पी.एफ. की पर्ची नहीं।

"स्पेयर पार्ट्स डिविजन से प्रतिदिन 4- 5 करोड़ रुपये का माल बाहर भेजा जाता है। डीलरों की भारी माँग, तुरन्त पूरी करो की डिमाण्ड रोज रहती है। लेकिन हीरो होण्डा स्पेयर पार्ट्स डिविजन में उत्पादन बिलकुल भी नहीं होता। तैयार माल पूर्णतः बाहर से मँगवाया जाता है। हीरो होण्डा फैक्ट्री में सिर्फ पैकिंग और शिफ्टिंग का काम होता है। फैक्ट्री में कोडिंग, काउन्टिंग, पैकिंग व सीलिंग की ही मशीनें हैं – माल उत्पादन की कोई भी मशीन स्पेयर पार्ट्स डिविजन में नहीं है।

"ठेकेदार के जरिये रखे वरकरों की तनखा 2600 रुपये थी और साल- भर पहले मैंने एक सुपरवाइजर को एक मजदूर के थप्पड़ मारते देखा है। पिछले वर्ष होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर कम्पनी में हँगामे के बाद हीरो होण्डा में ठेकेदार के जरिये रखे वरकरों की तनखा 3600 रुपये की गई। इधर काट- पीट कर किसी वरकर को 3600 और किसी को 4200 रुपये दिये जा रहे थे.... छुट्टी से लौटे कुछ मजदूरों को ठेकेदार ने ड्युटी पर लेने से इनकार किया तो चाणचक्क हड़ताल हो गई। 15 अप्रैल को काम बन्द करने का आह्वान किसी यूनियन ने नहीं किया था; कोई लीडर नहीं थे। मैनेजमेन्ट ने स्थाई मजदूरों को तत्काल छुट्टी पर भेज दिया। जून- जुलाई 05 के होण्डा मामले के दृष्टिगत राज्य सरकार फौरन हरकत में आई। फैक्ट्री को आग लगाने की बातें.... वरकरों में से कुछ लोगों को छाँट कर उनके साथ 20 अप्रैल को 30% वेतन वृद्धि, 500 को स्थाई करने, सफेद वर्दी आदि वाला मौखिक समझौता किया गया। समझौता करने वाले वरकर फैक्ट्री से गायब – कम्पनी ने खरीद लिये की बातें..... 21 अप्रैल को 5500 में से फैक्ट्री में कार्य के लिये पहुँचे 4000 मजदूरों में गुस्सा – 'हमारे साथ धोखा हुआ है' की बातें।"

-दरारें-दरारें-

मण्डी में माल बने मनुष्यों का अन्य मालों की ही तरह संसार में इधर से उधर धकेले जाना वर्तमान का हावी, बहुत हावी पहलू है। मजबूरी में हम कहाँ- कहाँ जाते हैं और क्या- क्या करते हैं। पुर्जेनुमा जोड़ों ने सम्पूर्ण पृथ्वी को अपनी जकड़ में ले रखा है।

लेकिन पुर्जों की तरह की बजाय मनुष्यों के रूप में जोड़- तालमेल के प्रयास भी वर्तमान में उल्लेखनीय स्तर पर हो रहे हैं। धकेले- खदेड़े जाते लोग तो नई जगहों पर भी ऐसी कोशिशें जारी रखते ही हैं, अनुभवों व विचारों के आदान- प्रदानों और मानवीय जोड़ों- तालमेलों के लिये बहुत कम तनखा में काम करने के लिये भी लोग अपनी इच्छा से दूरदराज आ- जा रहे हैं। यूरोप- अमरीका से यहाँ आते कुछ ऐसे ही लोगों से मुलाकातें हमारा सौभाग्य है। यूरोप से भारत आये एक मित्र ने दमन- तन्त्रों के संग- संग शोषण- तन्त्रों के आज एक स्तम्भ बने इन्टरनेट से वियतनाम में हो रही मजदूरों की शोषण- विरोधी हलचलों की कुछ जानकारी प्राप्त कर हमें भी दी है :

उत्पादन, वितरण, संचालन और नियन्त्रण अधिकाधिक विश्व मण्डी के सन्दर्भ में हो रहे हैं। विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिये स्थान और मजदूर (अधिकारी भी) बदलने की गति तीव्रतर होती जा रही है। परिवर्तन का पैमाना है : अधिक सस्ते मजदूर, सरकार यानि दमन- तन्त्र की स्थिरता का भरोसा, बिजली- संचार- परिवहन का समुचित प्रबन्ध। उत्तरी अमरीका व यूरोप से वस्त्र उद्योग का एशिया में स्थानान्तरण.... जापान से फैक्ट्रियों का दक्षिण कोरिया- फिलिपींस- ताइवान जाना और फिर इन्डोनेशिया- मलेशिया- भारत- चीन.... इन्डोनेशिया में मजदूरों की आदत- सी बन जाना काम बन्द करना और चीन में मजदूरों के बढते दबाव के दृष्टिगत वेतन में वृद्धि.... उत्पादन कार्य के लिये वियतनाम एक आकर्षक स्थान के रूप में उभरा। इन चन्द वर्षों में ताइवान, हाँगकाँग, जापान, यूरोप में मुख्यालय वाली (**बाकी पेज दो पर**)

विचारणीय

एटम बमों से अधिक खतरनाक हैं परमाणु बिजलीघर

झूठ बोलना और छिपाना सरकारों के चरित्र में है। अर्ध- सत्य सरकारों की सामान्य क्रिया का अंग है। आडम्बर और प्रतीक –दिन में मोमबत्तियाँ जला कर मृतकों को श्रद्धाँजलि और शान्ति के लिये प्रार्थनायें दमन- शोषण के तन्त्रों के कर्णधारों के कपट के संग- संग उनकी असहायता की भी अभिव्यक्ति हैं।

– 1914- 1919 की महा मारकाट के बाद : और युद्ध नहीं ! 1939- 45 की उससे भी महा मारकाट के बाद : आगे कोई युद्ध नहीं ! हीरोशिमा तथा नागासाकी में एटम बमों से हमले के बाद : फिर कभी नहीं .... एटम बम बनने ही नहीं देने, बन चुके एटम बमों को समाप्त करना ! और .....और शान्ति/सुरक्षा के नाम पर एटम बमों, हाइड्रोजन बमों, भाँति- भाँति के परमाणु बमों के सरकारों द्वारा भण्डार बनाना। शान्ति ध्वज की वाहक भारत सरकार में सर्वसम्मति से उस व्यक्ति को राष्ट्रपति बनाया गया है जिसकी एटम बमों तथा उनके लिये वाहक वाहनों के निर्माण में अग्रणी भूमिका रही है। अमरीका- वमरीका सरकारों की बात छोड़िये, भारत सरकार द्वारा एटम बमों से युद्ध की तैयारी की एक झलक के लिये सेना के जनरलों के हाल ही में हुये सम्मेलन के बाद के प्रचार पर एक नजर डालिये : भारत सरकार ने बड़े पैमाने पर परमाणु और जैविक युद्धक कमान केन्द्रों की स्थापना को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुये स्वीकृति दे दी है ; 30 प्रतिशत टैंक परमाणु विकिरण के माहौल में काम करने के लिये तैयार किये जा रहे हैं; एटम बमों से युद्ध के लिये भारत सरकार की सेना ने अपनी योजना तथा रणनीति बनाने के उद्देश्य से कई स्तरों पर अभ्यास किये हैं ; सैना तीन विशिष्ट प्रक्षेपास्त्र युनिटों की स्थापना कर चुकी है ; सेना में परमाणु हथियार शामिल ; सेना को बड़े पैमाने पर परमाणु विकिरण रोधी पोशाकों की पूर्ति के लिये उनका निर्माण आरम्भ; जनरलों के सम्मेलन के अन्तिम दिन भारत के शीर्षस्थ परमाणु और जैविक वैज्ञानिकों ने जनरलों को परमाणु सुरक्षा कवच के इस्तेमाल तथा परमाणु कमान केन्द्रों की स्थापना के बारे में बारीकी से जानकारी दी ; वैज्ञानिकों ने जनरलों को परमाणु हथियारों की दिशा में भारत सरकार की प्रगति से अवगत कराया। (जानकारी 24.4.2006 के 'पंजाब केसरी' से)

– चिकित्सा के लिये, अनाज उत्पादन में वृद्धि के वास्ते, बिजली के लिये अनुसन्धान- प्रयोग- निर्माण उर्फ " परमाणु ऊर्जा का शान्तिपूर्ण उपयोग" सरकारों के एटम बमों के निर्माण के लिये एक आवरण रहा है। लेकिन मण्डी- मुद्रा के दबदबे में तीव्र से तीव्रतर हो रहा पृथ्वी का दोहन मानवों के शोषण के लिये परमाणु ऊर्जा को अधिकाधिक उल्लेखनीय भूमिका में लाने लगा। परमाणु ऊर्जा से बिजली का निर्माण बेहद खतरनाक है, कई पीढियों तक घातक प्रभाव डालता है, परमाणु बमों का सतत विस्फोट- सा है (कानून अनुसार शोषण के समान है) परन्तु सरकारें तथ्यों को छिपाती रही और बढती सँख्या में परमाणु बिजलीघरों का निर्माण.... लेकिन 26 अप्रैल 1986 को चेरनोबिल परमाणु बिजलीघर में हुये विस्फोट का यूरोप- व्यापी असर पड़ा। रूस, यूक्रेन तथा बेलारूस में पचास लाख लोग विकिरणों की चपेट में आये। पूरे पश्चिमी यूरोप में विकिरणों के धुँए का एक बादल बन गया था। एक लाख से अधिक कैंसर के अतिरिक्त मामले.... 1986 में सोवियत संघ के राष्ट्रपति रहे गोर्बाचोव ने अब, बीस वर्ष बाद " प्रायश्चित" के लिये विश्व की सशक्त सरकारों से अपील की है कि कम से कम 50 बिलियन डालर (करीब ढाई लाख करोड़ रुपये) की राशि वे चेरनोबिल परमाणु बिजलीघर विस्फोट के पीड़ितों के लिये दें ताकि उनके लिये शुद्ध (विकिरण रहित) पानी और हवा का प्रबन्ध किया जा सके। यूरोप में 1986 के बाद परमाणु बिजलीघरों के विरोध ने व्यापक रूप लिया। परमाणु बिजलीघरों का कूड़ा- कचरा भी इस कदर खतरनाक है कि जर्मनी में लोग परमाणु बिजली घर के कूड़े- कचरे से लदी ट्रेन को अपने- अपने क्षेत्र से गुजरने से रोकने के लिये पुलिस से भिड़े..... चेरनोबिल परमाणु बिजलीघर की घटना से सामने आये खतरों ने परमाणु बिजलीघर बन्द करने के लिये सरकारों पर दबाव बनाया और नये परमाणु बिजलीघरों के निर्माण पर लगाम लगी.... लेकिन फिर नयें सिरे से "साफ" ऊर्जा की, परमाणु बिजलीघरों की वकालत खुल कर होने लगी है और भारत सरकार के राष्ट्रपति अग्रणी वकीलों में हैं। एटम बम व मिसाइल निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाने वाले यह वैज्ञानिक तथा शिक्षक भारत में इस समय परमाणु बिजलीघरों में बनती 2720 मेगावाट बिजली को बढा कर 50 हजार मेगावाट करने के लिये प्रचार अभियान में जुटे हैं।

- दो और दो चार के संकीर्ण दायरे से बँधे व्यक्ति की, ज्ञानी की, वैज्ञानिक की भर्त्सना आसान है। नये परमाणु बिजलीघर को " अपने प्रान्त में" लपकने के लिये आतुर मुख्यमन्त्री के अधकचरेपन की, बेवकूफी की भर्त्सना आसान है। लेकिन इससे होगा क्या?
- पीढी- दर- पीढी के कटु अनुभवों के बावजूद हालात बद से बदतर हो रही हैं। व्यक्ति इस कदर गौण हो गया है, गौण होता जा रहा है कि अपने होने को प्रकट करने के प्रयास में हर व्यक्ति बम बनी है, बम बनती जा रही है। आत्मघाती बम बन कर व्यक्ति अपने संग कुछ और को मार रहा है.... लेकिन असल समस्या सामाजिक बम है जो अरबों तन- मन को लगातार लहुलुहान करता है, करोड़ों का कत्ल कर चुका है और पृथ्वी पर से सम्पूर्ण जीवन के नाश के मुहाने हमें ले आया है।
- सामाजिक बम कहिये, सामाजिक पागलपन कहिये, सामाजिक मनोरोग कहिये.... मन्थन उस सामाजिक प्रक्रिया का आवश्यक लगता है जो व्यक्ति व समाज की ऐसी गत बनाती है।
- इन पाँच- छह हजार वर्ष के दौरान संसार में उभरी, फैली और अब सर्वव्यापी बनी ऊँच- नीच, दमन- शोषण वाली समाज व्यवस्थाओं के सार को इस तरह भी रखा जा सकता है : समाज रचनायें जहाँ मनुष्यों की मेहनत के परिणाम मनुष्यों के ही खिलाफ होते हैं। ऊपर वाले सिकुड़ते- सिमटते जाते हैं और नीचे वाले दबाये- कुचले जाते हैं.... समस्त मानव योनि के लिये त्रासदी की स्थिति है यह।
- नई समाज रचना, नई सामाजिक प्रक्रिया के लिये हमारी मेहनत और हमारी मेहनत के परिणाम में सामंजस्य यानि सजीव श्रम और संचित श्रम में मित्रतापूर्ण सम्बन्ध एक प्रस्थान बिन्दू लगते हैं।■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। / **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।